मालती जोशी के 'सहचरिणी' उपन्यास में यथार्थ बोध

बबीता चौहान
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
बलभीम कॉलेज, बीड.

डॉ. राजेंद्रसिंह आ. चौहान
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
स्नातक एवं स्नातकोत्तर हिंदी विभाग, बलभीम कॉलेज, बीड.

मालती जोशी जी ने अपने उपन्यासों में नयी पिढी की आशा-आकाक्षांओं पर उन्होंने खुलकर विचार प्रस्तुत कीये है। दफ्तरी जीवन की निरस्था, भ्रष्टाचार, शारीरिक एवं मानसिक शोषण, सेक्स की विकृतीयाँ आदि का पर्दाफाश कीया है।

मालती जोशी जी के 'सहचारिणी' उपन्यास की नायिका नीलू मानसिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर पर विभिन्न मुसीबतों से जुझाते हुए संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। उसको किसी का भी सहारा मदद उसकी अपनी जन्मदायी माँ भी इसमें अपवाद नहीं। पति को छोडकर आने पर वह किसी के सहारे टिकी नहीं थी परन्तु माँ और पूनम उसके सहारे जी रही थी। अम्मा की पेंशन में पूनम की पढ़ाई और घर के खर्चे नहीं सिमट सकते। उसकी बहन को हमेशा लगता है कि दीदी इतनी विद्वान होने और जाँच-परख करनेवाली होकर भी पति चुनते समय धोखा कैसे खाया? कोई शौक से अपने पति का घर थोडे ही छोडता हैं। "माना कि वही घर स्त्री का स्वर्ग है, लेकिन इस हेतु कोई आत्मसम्मान तो दाँव पर नहीं लगा देता। और पति जब स्वयं कहे कि वह ऊब गया है, मुक्ति चाहता है, तब भी क्या उसकी दोहरी पकड़कर बैठना श्रेयस्कर है।"[1] नीलम ने अपने आपको इतना गिराना उचित नहीं समझा। शायद यही उसका अपराध था। वह अपना हक छोडकर चली आयी। अपने पैरों पर खडी रही।

योगेश के पास ढंग की नौकरी नहीं थी। वह यहां-वहां वर्कचार्ज पर काम करता था। जब उसने उसे प्रपोज किया तब नीलम ने 'हाँ' कह दी थी। व्यावहारिक धरातल पर माँ ने चाहा था कि उसके गाँव में जाकर पूछताछ करनी चाहिए। परन्तु उसने कहा कि उसके अन्तर्जातीय विवाह को घरवाले मान्यता नहीं देंगे। ये लोग यु.पी. के ब्राह्मण हैं। अपनी लीक से जरा भी नही हटेंगे। सौतेली माँ है। वह तो मानेगी भी नहीं। घर और जायदाद का उसे मोह नहीं है। बन्नु मामा ने खुश होकर माँ को बधाई दी कि जमाई मुफ्त में मिल गया। आर्य समाजी पद्धती से शादी करवायी गयी।

प्रोजेक्ट साइट पर बने माचिस की डिबियाँ जैसे छोटे से क्वार्टर्स में दोनों रहने गये। पंचमढी में मनाए हनीमून में किए गये खर्चे नीलम को फालतु लगे। उतने पैसों में संसार के लायक कितनी ही चीजे आ सकती थी। हनीमून का मूड सिर्फ चार महीने ही चला कि अचानक एक दिन योगेश के ताऊजी आ गये। उन्होंने योगेश को याद दिलाया कि गीता इस दुनिया में नहीं रही परन्तु उसे 'रेणू' को तो अपनाना चाहिए। योगेश ने साफ शब्दों में उस बुजुर्ग को कहा कि "वह लडकी मेरी नहीं है, यह आप भी अच्छी तरह से जानते हैं। मुझे अब और ज्यादा बेवकुफ बनाने की कोशिश मत कीजिए।"[2] उनकी बातचीत के टुकडे सुनकर नीलू प्रस्तरमूर्ति बनी अपने गगन चुम्बी प्रसाद को धराशायी होते देखती रही। ऐसा लगा कि "मेरा सब कुछ पीछे छूट गया है और मैं अकिंचन अनिकेत सडक पर आ गयी हूं।"[3]

सब कुछ जानने के बाद भी योगेश ने अपने ज़िन्दगी का वह काला इतिहास सुनाया।

योगेश ने जब हाईस्कूल अच्छे नंबरों से पास किया तब अगली पढाई के लिए उसकी विमाता ने कोरा जवाब दिया। तब ये ताऊजी सहारनपुर से दौडे आये और उन्होंने आर्थिक सहायता का आश्वासन दिया। ताऊजी ने उससे ये सौदा अपनी पांचवे नम्बर की लडकी के लिए किया था। कारण "पढे-लिखे लड़के इतने महंगे मिलते है अपने समाज में कि उन्हें बहुत पहले से ही छेंक लेना पडता हैं।"[4] उसने हाँ कर दी परन्तु शर्त यह रखी कि शादी पढाई खत्म करने के बाद ही होगी। परंतु कॉलेज में भर्ती होने से पहले ही ताऊजी ने उसकी सगाई कर दी।

लेकिन जब वह फोर्थ ईयर में ही था तब धोखे से बुलाकर उसकी शादी गीता से कर दी। कारण जीजा जी से गर्भवती हो गई थी। उसने गीता का मुँह तक देखा नहीं था। छह-सात महीने में ही उसे पिता बनने पर बधाई का तार मिला। कुछ महिनों के बाद पता चला कि गीता की मौत हो गयी। योगेश तब भी गाँव लोटकर गया नहीं। नीलम को बुरा इसलिए लगा कि यदि योगेश पहले कह देता तो वह ज्यादा प्यार करती परन्तु योगेश को डर था कि नीलम कहीं ना न कह दें। नीलम ने उस समय की अपनी स्थिति बयान की - "मुझे अब यह सोचकर ही शर्म आ रही है कि जिन दिनों में तुम्हें अपने मोहपाश में बाँधने के लिए व्याकुल थी, उन दिनों तुम किसी के पति थे, किसी के पिता थे।"[5] भाग्य ने योगेश का साथ दिया अन्यथा ज़िन्दगी भर योगेश उससे मुँह छिपाये घूमते रहते और उसकी मरण-कामना करते हुए अपनी दूसरी पत्नी को भुलावे में डाले रहते।

रेणू को उसके नाना - नानी छोड गये थे। यहाँ पर ही कहानी समाप्त हो जाती तो यह एक आदर्श और सुखद उपन्यास का अंत होता हैं। परन्तु मालती जोशी जी ने नायिका के जीवन की त्रासदी वहीं से प्रारंभ की है। केवल एक बात के कारण पति-पत्नी के सम्बन्धों में दरार पडी थी। "यूं तो पति-पत्नी थे हम-लोग, देह-धर्म निभा ही रहे थे, पर उसमें अब पहले की-सी एकात्मकता, आंतरिकता नही रह गयी थी। बाकायदा एक शीत-युद्ध-सा छीडा हुआ था। हर आने वाला दिन मेरे सामने एक समस्या की तरह मुंह बाये खड़ा हो जाता।"[6]

Scanned by CamScanner